प्रातःक्लास 24/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। ज्ञान की भी यात्रा है, याद की भी यात्रा है। वह है मूलवतन की यात्रा। वह है वैकुण्ठ वतन की यात्रा। तो गाया तुम दोनों यात्राओं पर हो। अभी यह तो बच्चे जानते हैं हमको पढ़ाने वाला है ईश्वर। अभी मिलती है ईश्वरीय मत। पीछे मिलेगी दैवी मत। पीछे फिर आसुरी मत। यह भी किसको सरधा(सीधा) कहो आसुरी मत है तो बिगड़ जाते हैं। पाण्डवों को तो गुप्त ही चलना है। नहीं तो बिगड़ पड़ेंगे। समझते बड़ा मुश्किल है; इसलिए बाबा कहते हैं कोशिश करके पहले–2 बात बतानी चाहिए बाप की समझानी। तो फिर सर्वव्यापी की बात भी निकल जावेगी। बाप की समझानी से तो मनुष्यों की बुद्धि खुल जानी चाहिए। जबकि तुम सिद्ध कर बतलाते हो। कृष्ण भगवान नहीं है। तुम ही सिर्फ़ कहते हो शिवभगवानुवाचः ; परंतु मनुष्यों की बुद्धि इतनी ठिक्कर–भित्तर की है जो ऐसी सहज बात भी किसकी बुद्धि में नहीं बैठती है। हमारा प्यार किससे है? मिट्टी से तो प्यार नहीं होता। अभी उनको तो कुछ भी कह नहीं सकते हैं। जैसे मिट्टी वा पत्थर है। वैसे ब्रह्म महतत्व भी क्या है। कुछ भी नहीं। वह तो रहने का स्थान है ना। आकाश को क्या कहेंगे? यह भी रहने का स्थान है। उनको भी फिर भगवान कैसे कह सकते हैं। जैसे यह (आकाश) रहने का स्थान है वैसे वह (ब्रह्ममहत्व) रहने की जगह है। वहां आत्माएं रहती हैं। यह है जीवात्माओं के रहने का स्थान। सिर्फ़ आत्मा नहीं कह सकेंगे। दुनियाँ तो इन बातों को ज़रा भी नहीं जानती। तुम बच्चों की बुद्धि में है हम आत्माओं के रहने का स्थान है ब्रह्ममहतत्व। यह बातें कोई भी विद्वान, आचार्य, पंडित आदि नहीं जानते। तुम्हारे पास इतने ढेर आते हैं वह क्या समझते होंगे। कोई तो थोड़ा ही समझ कर चले जाते हैं। भल तुम्हारे पास सेंटर भी बहुत आते हैं; परंतु याद की यात्रा बहुत ही परपक्व अवस्था चाहिए। अभी तो सन्यासियों आदि से कितना माथा मारते हो। यह लोग अंत में कहेंगे हम तो सभी फ़ेल हैं। जैसे महऋषि ने भी कहा है ना हम फ़ेल हैं। भक्ति मार्ग में सभी फ़ेलियर्स हैं। यह भी तुमको समझाना पड़ता है। शास्त्रों आदि में तो यह बातें हैं नहीं। उनमें है मनुष्य मत। तुम जानते हो हम अभी चलते हैं ईश्वरीय मत पर। दैवी मत पर भी नहीं। मनुष्य तो सभी हैं तमोप्रधान। तो उन्हों की मत हम कैसे लेंगे इस समय है हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर। जबकि बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। वही हमको श्रीमत दे रहे हैं। मनुष्यों की मत है ही भक्ति मार्ग की। ज्ञान की हो न सके। ज्ञान तो सिवाय ब्राह्मणों के और कोई को होता ही नहीं। हम किसके मत पर चल रहे हैं, हमको किसकी मत मिल रही है, ज़रूर कोई तो होगा ना। ऐसी ईश्वरीय मत को छोड़ हम मनुष्य मत पर फिर कैसे चलेंगे। चलेंगे। भल बड़े–2 शंकराचार्य आदि हैं हम तो कहेंगे यह भक्ति दुगर्ति को पाया हुआ है। उनका बुद्धि योग बाप से है नहीं। बाप खुद कहते हैं विनाशकाले विपरीत बुद्धि। मुझे बिल्कुल जानते ही नहीं। गाली देते रहते हैं। तो ऐसे विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। भगवानुवाच है ना; परंतु भगवान को ही नहीं समझते हैं। रात–दिन का फ़र्क पड़ जाता है। इस समय एक बात में ही तुम्हारी विजय होनी है। तुम समझते हो इस स्थापना का कार्य तो होना ही है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। सो कब और किसके? ब्रह्मा द्वारा ज़रूर ब्राह्मण ही होंगे। ब्रह्मा तो रचयिता नहीं है। रचयिता है ही निराकार शिवबाबा। वह तो है ही एक। बाकी तो भक्ति मार्ग के अथाह चित्र हैं। मनुष्यों की भी तो देवताओं की भी है। वह तो है निराकार। निराकार का भी अर्थ नहीं समझते हैं। वह समझते हैं निराकार माना कुछ है नहीं। तुम समझाते हो उनका आकार–साकार नहीं है। आकार सूक्ष्मवतन वालों को साकार स्थूलवतन वालों को कहा जाता है। तो वह समझते हैं आकार–साकार नहीं है तो कुछ भी नहीं है। नाम–रूप, देश–काल है नहीं। रावण ने बिल्कुल ही तमोप्रधान बनाये दिया है। सभी का गला ही घुट जाता है। अभी तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो अच्छी रीत समझ सकते हैं। तुम बच्चों को भी बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। युद्ध भी गाई हुई है। हंस और बगुलों की कितनी युद्ध चलती है। उन्होंने कौरवों और पाण्डवों स्थूल लड़ाई दिखाई है। गीता में बाप ने क्या समझाया है अभी तुम समझते हो। लड़ाई का तो नाम निशान

नहीं। बाप तो रायजोग सिखलाते हैं। टीचर पढ़ावेंगे या लड़ाई सिखावेंगे। यह पाण्डव गवर्मेन्ट बड़ी ज़बरदस्त गवर्मेन्ट है। पाण्डव गवर्मेन्ट की विजय। कौरवों गवर्मेन्ट का विनाश तो हुआ ही है; परंतु रावण के सम्प्रदाय का संग भी बड़ा कड़ा है। यह है राम सम्प्रदाय। वह बगुल। तुम हंस। घर में भी मित्र–सम्बंधियों आदि का कितना हंगामा होता है। एक तरफ आसुरी सम्प्रदाय ढेर और दूसरे तरफ तुम ब्राह्मण सम्प्रदाय कितने थोड़े हो। गायन भी है राम गयो.... आत्माएं सभी चली जावेंगी। रावण सम्प्रदाय और राम सम्प्रदाय। रावण सम्प्रदाय के तो बहुत ही ढेर हैं। राम सम्प्रदाय के तो कितने छोटे हैं। फिर भी प्रजा बनती रहती है। थोड़ा बहुत सुना बेहद के बाप से वर्सा मिलता है यह भी प्रजा बन गई है। यही तुमको एडवरटाईज़मेंट करनी है। बाकी लड़ाई आदि की बात ही नहीं। शास्त्रों में क्या–2 बातें लिख दी हैं। जैसे नॉवेल्स बनाते हैं। उनमें बहुत छी–2 अक्षर होते हैं। शास्त्रों में छी–छी अक्षर नहीं होते हैं। नॉवेल्स में लव की बातें होती हैं। नॉवेल्स पढ़ने की आदत किसमें पड़ जाती है तो वह छोड़ते नहीं हैं। कई अच्छी बच्चियां भी नॉवेल्स पढ़ लेती हैं। पिय के घर से छिपाकर ले आती हैं। बाबा को तो मालूम पड़ जाता है। छिपाये–2 कर पढ़ते हैं। तुमको ससुर घर तो जाना है ना। दो बाप मिले हैं। श्रृंगारने लिए। यह बेहद का पिय का घर है। पिय के घर रावण राज्य में क्या रखा है कुछ भी नहीं। हम अभी ससुर घर जाते हैं। ज़ेवर आदि कुछ नहीं वनवा में बैठे हैं। तुम्हारी बुद्धि में है हम सुखधाम में जाने वाले हैं। वाया शान्तिधाम। तो शान्तिधाम को भी याद करना है। अभी घर जाना है। बाप कहते हैं मुझ अपने बाप को याद करो। बाप वहां भी तो यहां भी है। घर तो वहां है ना। तुम्हारा भी वहां घर है। अभी तो घर जाना है ना। फिर नीचे उतरेंगे। अभी तो कितना दूर जाना है। सभी आत्माओं का झुण्ड जावेगा। जैसे मक्खियों का झुण्ड जाता है। सबसे तीखा झुण्ड मधुमक्खियों का होता है। बहुत आपस में एकता होती है। इन्हों का हेड रानी होती है। भारत में भी पहले–2 रानी पीछे राजा; इसलिए मदरकन्ट्री कहते हैं। तुम ही रानियां बनती हो। राजभाग लेते हो। माताओं ने ही पुकारा है बाबा हमको पति लोग तंग करते हैं। नंगन करते हैं। टच करते हैं। यह भी माया है ना। ऐसे शरीर तो टच बहुत करते हैं बच्चियां कहती हैं हमको यह अच्छा नहीं लगता। यह भी देह अभिमान की बात है। देह को देखकर टच करते हैं। आत्मा को देखें तो आत्मा को टच कर सकते हैं क्या। आजकल बाप कहते हैं यह भी सहन करो। टच करने में कोई पाप नहीं है। पाप की बात है नंगन होना। यह तो कुछ नहीं है। द्रौपदी ने भी पुकारा है हमको नंगन करते हैं। वह बिल्कुल न होना चाहिए। बाप समझाते हैं साथ में धर्मराज भी इकट्ठा है राइट हैण्ड। बच्चों की चलन नोट करते जाते हैं। ड्रामा में पार्ट है सज़ा देने वाला भी वहीं है। यह सभी नूँध है ड्रामा में। ऐसे नहीं कि कोई किताब है जिसमें बैठ लिखते हैं नहीं ड्रामा में नूँध है। बाप समझ सकते हैं और समझाते हैं। ब्रह्मा द्वारा बाप बैठ समझाते हैं वह भी ड्रामा अनुसार। अंत में यह टचिंग आदि कुछ नहीं रहेगी। कुछ भी याद न रहेगा। ऐसी देही अभिमानी अवस्था बन जावेगी। जैसे सतयुग में पवित्र सम्बंध में रहते हो वैसे यहां तुम पवित्र बन जावेंगे। जैस(से) पवित्र आत्मा आई वैसे ही पवित्र बन जावेंगे। अभी पवित्र बनते हैं जो फिर पवित्रता में सतयुग में आवेंगी। फिर जैसी–2 अवस्था में है। अवस्था पर ही पद मिलता है। यह भी तुम जानते हो हरेक एक्टर्स की चलन अपनी है एक न मिले दूसरे से। यह एक बेहद क(ा) नाटक है। उस ड्रामा को समझाने की विशाल बुद्धि चाहिए। कितनी छोटी सी आत्मा उनको दूम्ब कितना बड़ा मिलता है पार्ट बजाने के लिए। उनका पार्ट भी अविनाशी है। हरेक आत्मा का फीचर्स, अपना शरीर अपना–2 है। फिर दूसरा जन्म लेंगे। उसमें भी हरेक आत्मा का फीचर्स अलग। यह बनाया हुआ बेहद का ड्रामा है। यह बहुत सूक्ष्म बातें हैं। कोई अच्छी तरह ख़्याल करेंगे तो मज़ा आवेगा। कम पढ़ाई थोड़े ही है। बहुत बड़ी पढ़ाई है। सेकण्ड में जीवन मुक्ति। बच्च पैदा हुआ और मालिक बना। फिर उनकी चलन पर है। अगर चलन अच्छी नहीं होगी तो बाप कहेंगे यह तो लायक (अधूरी मुरली)